20.01.25

Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh.

कक्षा- नौवीं

विषय- हिन्दी साहित्य शिक्षिका- श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ-5 'अपना-अपना भाग्य' (कहानी) लेखक- जैनेंद्र कुमार

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य सागर' की पृष्ठ संख्या-26 पर दिए पाठ-5 'अपना-अपना भाग्य' कहानी के शेष भाग का अध्ययन करेंगे।

बच्चो! 'अपना-अपना भाग्य' कहानी में अभी तक हमने पढ़ा है कि संध्या का समय था। लेखक एक मित्र के साथ घूमने-फिरने के बाद नैनीताल में सड़क के किनारे बैंच पर बैठे थे। आकाश में हल्के बादल हवा के पालने में झूल रहे थे। अँधेरा बढ़ता चला जा रहा था। उस अँधियारे वायुमण्डल में विविध रंगों के बादल दिखाई दे रहे थे। कुछ देर बैठने के उपरान्त लेखक ने वहाँ से उठना चाहा, किन्तु मित्र ने हाथ पकड़कर बिठा लिया। लेखक मित्र के साथ बैठे-बैठे परेशान मालूम पड़ रहे थे। इतनी देर में कोहरे की सफेदी के बीच कोई काली सी वस्तु दिखाई दी। कुछ और निकट आने पर मालूम हुआ कि नंगे पैर, नंगे सिर और मैली-कुचैली कमीज़ पहने हुए, लम्बे-लम्बे और बिखरे हुए बालों वाला एक लड़का सिर खुजलाता हुआ उनकी तरफ़ आ रहा है। उसके पैर लड़खड़ा रहे थे। वह कहाँ और किस उद्देश्य से जा रहा था, इसकी जानकारी नहीं हो पाई। चुंगी की

कक्षा - नौवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ-5 'अपना-अपना भाग्य')

लालटेन के प्रकाश में देखने पर मालूम हुआ कि वह दस-बारह वर्षीय बालक है, जिसका गौर रंग मैल की मोटी परत ने ढक रखा था। उसके चौड़े माथे पर झुर्रियाँ दिखाई दे रही थीं। उसकी मुख मुद्रा देखने से मालूम हुआ कि उसे अपने चारों ओर के वातावरण, सामने के तालाब और कुहरे आदि का कोई ज्ञान न था। उसे यदि दिखाई दे रहा था तो वह था अपना भविष्य और अपनी एकाकी दुनिया।

उसी क्षण लेखक के मित्र ने उससे पूछा कि इतनी रात गए जब लोग सो रहे हैं, वह क्यों घूम रहा है? बालक ने कुछ उत्तर नहीं दिया और चुप खड़ा रहा। आगे पूछने पर उसने बताया कि वह एक रुपया और झूठे खाने पर दुकान पर काम करता था, वहीं पर गत रात सोया था, किन्तु अब वह दुकान से निकाल दिया गया है। इसलिए उसके खाने और सोने का कोई सहारा नहीं रहा।

बालक फिर भी वहीं खड़ा रहा। आगे पूछने पर मालूम हुआ कि उसके माँ-बाप और भाई-बहन भी हैं जो दूर गाँव में रहते हैं। गाँव में कामकाज नहीं था जिसके कारण सभी लोग भूखे रहते थे अतः वह गाँव से भाग आया। उसके साथ गाँव का एक और बालक भी आया, या वह मर गया था। इतना सुनकर लेखक उसे वकील मित्र के पास ले गया, जिन्हें नौकर की आवश्यकता थी।

बच्चो! अब हम पृष्ठ संख्या - २१ से पाठ को पढ़ेंगे व समझेंगे। वकील मित्र लापरवाह प्रवृत्ति के थे। वह कश्मीरी शॉल लपेटे थे। पैरों में मोजे और चप्पले पहने हुए थे। उनके स्वर में हल्की झुँझलाहट थी, कुछ लापरवाही थी। उन्हें गरीब बच्चों को देख उन पर दया नहीं आती थी। वकील साहब ने लेखक के मित्र से पूछा कि इस लड़के को कहाँ से लाए हो? क्या तुम इसे जानते हो? वकील मित्र को उस बालक को देख दया नहीं आती बल्कि उनकी गरीबी

के प्रति अलग ही विचारधारा थी। वे गरीबों पर विश्वास नहीं करते थे। वे उस गरीब पहाड़ी बालक के लिए कहते हैं कि ये पहाड़ी बच्चे बहुत ही शैतान होते हैं। बच्चे - बच्चे में अवगुण भरे होते हैं। हो सकता है कि सामान लेकर यह लड़का गायब ही हो जाए। लेखक का मित्र पहाड़ी बालक की सहायता करने के लिए उसे वकील मित्र के पास काम दिलाने के उद्देश्य से लाया था किन्तु वकील मित्र का मानना था कि यदि किसी ऐरे - गैरे को नौकर बना लिया जाए तो क्या जाने वह अगले दिन क्या - क्या लेकर चंपत (गायब) हो जाए। लेखक के मित्र ने वकील मित्र को विश्वास दिलाया कि यह लड़का अन्य सभी काम करने वाले लड़कों जैसा नहीं निकलेगा फिर भी वकील मित्र ने पहाड़ी गरीब बालक को काम देने से साफ़ इन्कार कर दिया। मित्र के समझाने पर भी वकील मित्र राजी नहीं हुए। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करें? इसलिए लेखक असमंजस की स्थिति में था। काम पर न रखने पर वह गरीब बालक कोहरे में जाकर मिल गया। लेखक का मित्र उस लड़के को कुछ पैसे देना चाहता था। जेब में हाथ डालने पर पता चला कि केवल दस - दस रुपए के नोट हैं, खुले पैसे नहीं हैं। बजट बिगड़ने के भय से वह उस लड़के को दस का नोट नहीं देना चाहते थे। लेखक के मित्र ने उस लड़के को अगले दिन सुबह दस बजे होटल डि पव में आने को कहा।

होटल पहुँचने पर भी लेखक के मित्र को उस लड़के के पास कम कपड़े होने की बात बेचैन करती रही। भयानक शीत थी और लड़के के पास बहुत कम कपड़े थे। 'यह संसार है यार' — ऐसा सोचकर लेखक अपने बिस्तर में सोने चला गया और मित्र उदास होकर कहने लगा कि इसे स्वार्थ कहो, लाचारी (मजबूरी) कहो

निठुराई (निष्ठुरता) कहो या बेशर्मी।

अगले दिन वह लड़का नहीं आया। लेखक और उसका मित्र अपनी नैनीताल की यात्रा को समाप्त कर चलने को हुए। वे खुशी-खुशी वापस जा रहे थे। मोटर में सवार होते ही यह समाचार मिला कि कल रात एक पहाड़ी लड़का सड़क के किनारे पेड़ के नीचे ठिठुर कर मर गया। मरने वाला लड़का दस वर्ष का था और काले चिथड़ों की कमीज़ पहने था। वह लड़का उसी स्थान पर पड़ा मिला था जहाँ लेखक और उसके मित्र को वह मिला था। इस गरीब बच्चे की मृत्यु एक लवारिस बच्चे की तरह हो जाती है। उस बालक के मुँह, छाती, मुट्ठियों पर, पैरों पर बर्फ की हल्की-सी चादर चिपक गई थी। उसका सारा शरीर अकड़ गया था। वह पहाड़ी गरीब बालक सड़क के किनारे पेड़ के नीचे ठिठुरकर मर गया था।

लेखक एवं उसके मित्र ने यह समाचार सुना और उसकी दर्दनाक मौत पर सोचा - 'अपना-अपना भाग्य'। लेखक कहता है कि उस लड़के के भाग्य में वही जगह, वही दस साल की उम्र और वही काले चिथड़ों की कमीज़ थी। आदमियों की दुनिया में बस यही उपहार उसके पास छोड़ा था। वे दोनों उस बालक की सहायता करने की बजाए उसकी स्थिति को अपना-अपना भाग्य बताकर अपनी ज़िम्मेदारी से बचना चाहते थे।

बच्चो! आज हमारा यह पाठ पूर्ण हो चुका है। सभी छात्र इस पाठ को दो-तीन बार पुनः पढ़ेंगे व समझेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही हूँ। इस कार्य को आप सभी पाठ की सहायता से स्वयं करने का प्रयास करेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

कक्षा - नौवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ-5 'अपना-अपना भाग्य')

" भयानक शीत है उसके पास बहुत कम कपड़े ----।"
यह संसार है यार, " मैंने स्वार्थ की फिलासफी सुनाई।"

प्रश्न (क) लेखक के मित्र की उदासी का कारण स्पष्ट करते हुए बताइए कि वह पहाड़ी बालक की सहायता क्यों नहीं कर सका ?

प्रश्न (ख) 'यह संसार है यार' — वाक्य आजकल के मनुष्यों की किस प्रकृति का द्योतक (प्रकट करने वाला) है ?

प्रश्न (ग) 'अपना-अपना भाग्य' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न (घ) 'अपना-अपना भाग्य' कहानी में निहित व्यंग्यों को स्पष्ट कीजिए।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]